International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(3): 386-388

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(3): 386-388
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 03-03-2017
Accepted: 04-04-2017

ज्योति रानी
म,द,वि, रोहतक,
हरियाणा, भारत

Correspondence
ज्योति रानी
म,द,वि, रोहतक,
हरियाणा, भारत

संस्कृत में शतकों की परम्परा व विकास

ज्योति रानी

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य बहुत ही विशाल एवं समृद्ध हैं। संस्कृत साहित्य लौकिक और वैदिक दो भागों में बांटा गया हैं। वैदिक साहित्य के अन्तर्गत चारों वेद (ऋक्, यजु, साम, अथर्व) ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद्, स्मृति ग्रन्थ, पुराण आदि समाविष्ट है। वैदिक साहित्य की भान्ति लौकिक–साहित्य का क्षेत्र भी विस्तृत और समृद्ध है। इसके अन्तर्गत महाकाव्य, रामायण, महाभारत, गद्यकाव्य, पद्यकाव्य, चम्पूकाव्य, नाटक, गीतिकाव्य इत्यादि शामिल किए गए हैं। पद्यकाव्य के अन्तर्गत विद्वानों ने शतक काव्यों के नाम से भी रचनाएँ की है।

''शतक काव्य'' जैसा कि नाम से ही सर्वविदित है कि कोई भी ऐसा काव्य जो 100 (शतक) सौ पद्यों का समूह हो, वही शतककाव्य कहलाता है। शतककाव्यों की परम्परा कब, कहाँ और कैसे शुरू हुई? इस विषय में कुछ भी कहना कठिन है, क्योंकि प्राचीन काल से ही किसी भी विषय पर 100 पद्यों की रचना करके उसे शतक का नाम देने की परम्परा चली आ रही हैं। लगभग 2000 वर्षो से एक ही विषय पर लिखे गए 100 पद्यों को उस विषय का नाम देकर शतक नाम देने की परम्परा चली आ रही है। संस्कृत साहित्य में 100 पद्यों की रचना शतक, पचास पद्य लिखकर पंचाशिका, पांच सौ पद्यों की रचना पंचशती और सात सौ पद्यों की रचना सप्तशती कहने की परम्परा भी है।[1]

शतककाव्य कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि उस समय नाप–तोलकर 100 ही पद्य मिलेगें। उस रचना में पद्यों की संख्या सौ से कम या अधिक भी हो सकती हैं। परन्तु प्राचीन परम्परा के अनुसार सौ से अधिक पद्य हो सकते थे, परन्तु कम नहीं होते थे, ऐसी धारणा थी।

शतकों की परम्परा कब शुरू हुई? इस विषय पर निश्चित रूप से कुछ भी कहना कठिन है, परन्तु ऐसा माना जाता है कि हर्षवर्धन के महाकवि बाणभट्ट का 'चण्डीशतक' प्राचीनतम शतकों मे से एक है जो प्रसिद्ध स्तोत्र काव्य है। परन्तु शतकपरम्परा भर्तृहरि के तीनों शतकों की रचना के बाद ही लोकप्रिय हुई है, इसी कारण शतक–काव्यों के इतिहास में सबसे पहला नाम भर्तृहरि का ही आता है। इनके द्वारा रचित तीन शतक – 1. नीति शतक 2. श्रृड्.गार शतक 3. वैराग्य शतक संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध हैं।

भर्तृहरि की रचनाएँ जितनी लोकप्रिय व प्रसिद्ध हुई हैं, उनका स्थितिकाल और व्यक्तित्व उतना ही अज्ञात व अन्धकारमय है। इनके नाम से मुक्तक पद्यों के तीन संकलन प्राप्त होते हैं – नीतिशतक, श्रृड्.गारशतक, वैराग्शतक। यद्यपि इनके नाम से पता चलता है कि प्रत्येक रचना में 100–100 पद्य होगें। तथापि नीतिशतक में 126, श्रृड्.गारशतक में 104 और वैराग्य शतक में 141 पद्य हैं, नाम के अनुरूप ही इन सभी के विषय हैं।

भर्तृहरि के समय और जीवन के विषय में अनेक मत एवं किंवदन्तियाँ भी हैं, जनश्रुति के आधार पर ये महाराज विक्रमादित्य के बड़े भाई थे कुछ विद्वान भर्तृहरि को 'वाक्यपदीय' के रचयिता, व्याकरणाचार्य भर्तृहरि से अभिन्न मानते हैं, चीनी यात्री इत्सिंग के अनुसार इनकी मृत्यु 650 ई॰ में हुई।

इसी भर्तृहरि को वाक्यपदीयम् एवं तीनों शतकों का रचयिता लेखक कीथ ने कहा है। इनके शतकों का अध्ययन करने से पता चलता है कि वे वैदिकधर्मावलम्बी ही नहीं प्रत्युत पूर्ण अद्वैतवादी भी थें। उन्हें वैदिक आचार–विचार एवं पुराणों पर पूर्ण आस्था थी। उन्हें संसार का अच्छा अनुभव था। नीतिशतक में मनुस्मृति और महाभारत की गम्भीर नैतिकता, कालिदास की सी प्रतिभा के साथ प्रस्फुटित हुई है।[2] विद्या, वीरता, मैत्री, साहस, परोपकार, उदारता, उद्यम आदि जैसे उदात्त गुणों को ग्रहण करने का कवि ने आग्रह किया है –

येषां न विद्या तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणों न धर्मः।
ते मृर्त्युलोके भारभूता,
मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति।।[3]

विद्वानों के अनुसार शतकत्रय का क्रम भर्तृहरि के जीवन में इस किंवदन्ती को पुष्ट करता हुआ प्रतीत होता है, जिसके अनुसार भर्तृहरि स्वयं एक राजा थे, एक बार किसी साधु महात्मा ने एक अमरफल लाकर राजा को दिया। अपनी रानी पिंगला से अत्यधिक प्रेम करने के कारण राजा ने वह फल रानी को दे दिया, रानी ने वह फल स्वयं खाने की बजाए अपने किसी प्रियतम व्यक्ति को दे दिया। उस व्यक्ति ने ले जाकर नाचने वाली किसी वैश्या को दे दिया, क्योंकि उस व्यक्ति को वह वैश्या प्राणों से भी प्रिय थी, वेश्या ने सोचा कि इस अमर फल को खाकर इस वैश्य जीवन में मैं अमर होकर क्या करूंगी? अतः उसने वह फल दीर्घायु की कामना से राजा को दे दिया। फल को देखते ही राजा सब कुछ समझ गया और उन्हें अपनी पत्नी, राज्य, अपने कार्य से विरक्ति हो गई। इस प्रकार युवावस्था में सम्भवतः उन्होंने 'नीतिशतक' लिखा। विवाह के बाद अपनी पत्नी पर अत्यधिक आसक्त होने के कारण 'श्रृड.गार शतक' लिखा और अपनी पत्नी की कपटता के कारण सबसे विरक्ति हो जाने पर ''वैराग्य शतक'' लिखा।[4]

नीतिशतक

भर्तृहरि ने 'नीतिशतक' में व्यावहारिक जीवन की विषम परिस्थितियों का सुन्दर चित्रण प्रस्तुत किया है। इनके शतकों से संकलित पद्य अनेक ग्रन्थों में मिलते हैं जिनमें मूर्खो की निन्दा, सज्जनों की प्रशंसा, परोपकार, धैर्य, दैव भाग्य तथा कर्म की महिमा का वर्णन किया गया हैं। परोपकार पद्धति से सड्.कलित निम्नलिखित पद्य में सानुप्रास पदावली का लालित्य भाव सुन्दरता को अत्यधिक बढ़ा देता है जैसे –

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा –
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः पूरयन्तः।
परगुण–परमाणून पर्वतीकृत्यनित्यं,
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।।[5]

यथासंख्य अलड्.कार का सुन्दर प्रयोग कवि ने इस लघुकाव्य पद्य में किया हैं –

मृग–मीन–सज्जनानां तृण–जल–सन्तोषविहितवृतीनाम्।
लब्धक–धीवर–पिशुना–निष्कारणवैरिणो जगति।।[6]

कवि भर्तृहरि ने अपने –नीतिशतक' में कहीं कर्म की प्रशंसा की है यथा ''नतस्तत्कर्मभ्यो विधिरदि ने येभ्यः प्रभवति।''[7]
तो कहीं पर कवि भाग्य की स्तुति में सलंग्न है, कही धन का गुणगान करता है तो कहीं स्वाभिमान पर बल देता हैं, – ''सर्व कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः सत्वानुरूपं फलम्।''[8] इस प्रकार भर्तृहरि की रचना ''नीति–शतक'' संस्कृत साहित्य कविता का अनुपम हार है।

श्रृड्.गार शतक

प्रस्तुत शतक काव्य में भर्तृहरि ने पुरूष स्त्री पर प्रभावशाली श्रृड्.गार व स्त्रियों के हाव–भाव का विस्तृत वर्णन किया है। श्रृड्.गार शतक में कवि ने नारी के हृदय की सच्ची परख की है। कवि ने इसे मधुरशैली में वर्णित किया है कि स्त्रियाँ कैसे हाव–भाव, चंचल, चितवन यौवन की मादकता और अड्.गों की मोहकता से पुरूषों पर कैसा जादू डाल देती हैं – यथा –

भ्रूचातुर्यात्कुञ्चिताक्षाः कटाक्षाः,
स्निग्धा वाचो लज्जितान्ताश्च हासाः।
लीलामन्दं प्रस्थितं च स्मितं च,
स्त्रीणामेतदभूषणं चायुधं च।।[9]

श्रृड्.गारशतक के कुछ पद्यों में ऋतुओं का वर्णन भी किया गया है, कतिपय पद्य यौवन के विकारों से प्रभावित न होने वाले व्यक्तियों से सम्बद्ध हैं, तो कहीं–कहीं स्त्रियों की निन्दा भी की गई हैं, जैसे –

कामिनी–काय कान्तारे कुच–पर्वत–दुर्गमे।
मा सञ्चर मनः पान्य तत्रास्ते स्मर तस्कर।।[10]

ऋतुओं का वर्णन कवि ने कामोद्दीपन की दृष्टि से किया हैं, जैसे वसन्त की उद्दीपकता पर कवि का दृष्टिकोण इस प्रकार हैं –

सहकार–कुसुम–केसर–निकर–भरामोद–मूर्छित–दिगन्ते।
मधुर–मधु–विधुर–मधुपे–मधौ–भवेत्कस्यनोत्कण्ठा।।[11]

इस शतक के अनेक ऐसे पद्य है जिनमें वेश्याओं की निन्दा करते हुए, ऐसे लोगों की प्रशंसा की गई है जो स्त्रियों के रूप जाल में नहीं फंसते। कामदेव शूर से शूर पुरूष का भी गर्व चूर–चूर कर देता हैं।[12]
वास्तव में कवि ने पहले श्रृड.गार रस के आकर्षण का चित्रण प्रस्तुत करके, क्रमानुसार उसकी अस्थिरता दिखलाकर शान्त रस को ही प्रधानता दी हैं। इस प्रकार श्रृड्.गार के रूप में कवि ने नैतिक आदर्श की पवित्र धारा प्रवाहित की हैं।

वैराग्य–शतक

वैराग्य शतक में कवि ने सांसारिक भोगों में लिप्त मनुष्यों के प्रति करूणायुक्त होकर संसार की सारहीनता तथा वैराग्य की आवश्यकता समझाई है, इसमें कवि आकर्षण से विकर्षण की ओर, प्रणय से अप्रणय की ओर बढ़ता हुआ प्रतीत होता है, इनकी दृष्टि में तपस्वी जीवन ही श्रेयस्कर है, सांसारिक भोगों का भोग करते हुए मनुष्य स्वयं समाप्त हो जाता है, किन्तु विषय तो यथावत् पड़े ही रह जाते हैं, इस भाव को कवि ने बड़ी ही कुशलता से प्रस्तुत किया है –

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्तास्तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव यातास्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा।।[13]

भर्तृहरि ने तृष्णा, रूपादि विषय, याचना, गर्व आदि की निन्दा करते हुए, वृद्धावस्था सन्तोष और शान्ति, काल की महिमा, विरक्तता, संसार की अनित्यता, योगी आदि विषयों का वर्णन करते हैं। इनके मतानुसार एक निर्लिप्त मुनि भी ऐश्वर्यशाली सम्राट के तुल्य ही सुख का अनुभव करता है, यद्यपि दोनों के सुख के माप–दण्ड भिन्न–भिन्न है –

मही रम्या शय्या विपुलमुपधानं भुजलता,
वितानं चाकाशं व्यजनमनुकूलोऽयमनिलः।
स्फुरद्दीपश्चन्द्रो विरतिवनिता सड्.गमुदितः
सुखं शान्तः शेते मुनिरतनुभूतिर्नृप इव।।[14]

भर्तृहरि की शैली प्रसादगुणमयी, मुहावरेदार और परिष्कृत हैं, इसमें प्रवाह, पदलालित्य व अभिव्यक्ति हैं। इन्होंने वैदर्भी रीति को अपनाया है, भाषा सरल, सुबोध हैं, छन्दों की विविधता, विषय की रोचकता तथा सूक्तियों की सुन्दरता भर्तृहरि के काव्यों को और भी अधिक काव्यात्मक बना देती है।

अमरूकशतक

कवि अमरू या अमरूक द्वारा रचित ''अमरूक शतक'' श्रृड्.गार प्रधान मुक्तक–काव्यों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है, इसमें पद्यों की संख्या 90 से 115 तक प्राप्त होती है। एक किंवदन्ती के अनुसार अमरू नाम के एक राजा के मर जाने के बाद शंकराचार्य ने उनके शरीर में प्रवेश करके विषय–सुखों का भोग करने के अनन्तर इसकी रचना की थी, परन्तु कुछ विद्वानों के अनुसार अमरूक नामक कोई अन्य विद्वान थे, जिन्हें कश्मीरी माना गया है, अमरूक का काल अनिश्चित है, विद्वानों के आपसी मतभेद के बाद सर्वसम्मत मत से इनका समय 700–750 ई. के आस–पास स्वीकार किया है।

विषयवस्तु की दृष्टि से इनकी रचना अमरूशतक दाम्पत्य प्रेम के सरस और आवेगवूर्ण क्षणों की मधुर अभिव्यक्ति है, अमरूक की कविता अत्यन्त मनोहारिणी है, इनके मुक्तक पद्य रस से ओत–प्रोत हैं। अमरूक शतक में प्रेम का संजीव चित्रण है। इसमें कामी–कामिनियों की विभिन्न मनोवृत्तियों का उनके आमोद–विषाद का, कोप व अनुराग का, मान व प्रसादन का, हर्ष तथा रोदन का, त्याग व अधीरता का सूक्ष्म वर्णन किया गया है। अमरूक ने जिस श्रृड्.गार का चित्रण किया है वह यद्यपि कहीं–2 उद्दाम भी हो गया है, तथापि उनके काव्यों में भावों की कोमलता विचारों की शिष्टता दिखाई देती है।[15]

भल्लट शतकः

''भल्ल्टशतक'' कश्मीरी कवि भल्लट की रचना है, इनके पद्यों का उद्धरण सर्वप्रथम आनन्दवर्धनाचार्य के ध्वन्यालोक में मिलता है तथा बाद में क्षेमेन्द्र, अभिनवगुप्त और मम्मट ने भी इनके उद्धरण दिए हैं। भल्लट का काल नवम् शताब्दी का उत्तरार्ध और दशम् शताब्दी का प्रथम चरण माना जा सकता है। ''भल्लटशतक'' में तत्कालीन समाज के उच्च वर्ग के अयोग्य व्यक्तियों पर कटाक्ष किया गया है जैसे –

पातः पूष्णोभवति महंते नोपतापय यस्मात्
कालेनास्तं क इह न ययुर्यान्ति यास्यन्ति चान्ये।
एवावन्तु व्यथयतितरां लोकबाह्यैस्तमोभि –
स्तिस्मिन्नेव प्रकृतिमहित व्योम्नि लब्धोऽवकाशः।।

प्रस्तुत शतक काव्य में कवि ने कहीं–कहीं पर श्रृड्ंगार पद्यों का भी प्रयोग किया है, जो सरल व सुबोध शैली में होने के कारण बड़े ही हृदयाकर्षक हैं।[16]

सूर्यशतक

सूर्यशतक के रचयिता महाकवि मयूरभट्ट का समय 7वीं शताब्दी का पूर्वार्ध माना जाता है। विद्वानों की मान्यता है कि ये महाकवि बाणभटटट के निकट सम्बन्धी थे इनके विषय में एक किंवदन्ती हैं कि इन्होंने सूर्य की महिमा का 100 श्लोकों में वर्णन करके उन्होंने अपने असाध्य रोग का निवारण किया था। इस किंवदन्ती को 'काव्यप्रकाश' के रचनाकार मम्मट ने भी समर्थन दिया है। मयूरकवि ने यह स्तुति स्रग्धरा छन्द में लिखी है। अनुप्रासयुक्त पदावली का प्रयोग करके कवि सूर्य के अनेक अड्.गों, साधनों का वर्णन किया हैं। सूर्यशतक का आरम्भिक श्लोक है :

जम्भारातीभ कुम्भोद्भवमिव दधतः सान्द्रसिन्दूररेणुं
रक्ताः सिक्ता इवौधैरूदयगिरितटी–धातुधाराद्रवस्य।
आयान्त्या तुल्यकालं कमलवनरूचेवारूणा वो विभूत्यै
भूयासुर्भासयन्तो भुवनमभिनवा भानवो मानवीयाः।[17]

चण्डी शतक

चण्डीशतक की रचना महाकवि बाणभट्ट द्वारा की स्तुति में स्रग्धरा छन्द में 100 पद्यों की रचना की। अनुप्रासयुक्त पदावली, दीर्घ समास, जटिल वाक्य रचना सूर्यशतक और चण्डीशतक में समान रूप से मिलती है। परन्तु अपनी दीर्घता व किलष्टता के कारण ये दोनों ही शतक भक्तों में लोकप्रिय नहीं हो सके। ऐसा भी कहा जाता है कि सूर्यशतक व चण्डीशतक दोनों की रचनाएं कवियों द्वारा आपस में शाप देने से हुई है। चन्डीशतक में बाणभट्ट ने भगवती देवी की अनेकों शक्तियों, रूपों आदि का वर्णन किया है। जैसे देवी की अमोघ सहायताविषयक वर्णित श्लोक हैं–

विद्राणे रूद्रवृन्दे सवितरि तरले वज्रिणि ध्वस्तवज्रे
जाताशड्.के शशाड.के विरमति मरूति त्यक्तवैरे कुबेरे
वैकुण्ठे कुण्ठितास्त्रे महिषमतिरूषं पौरूषोपघ्ननिघ्नं
निर्विघ्नं निघन्ती वः शमयतु दुरितं भूरिभावा भवानी।।[18]

इस प्रकार कालानतर में हमारे श्रेष्ठ कवियों की प्रतिभा से हमारा शतक साहित्य बहुत ही समृद्ध होता चला गया। आगे चलकर अनेक शतक काव्य और अस्तित्व में आए जैसे–गोवर्धनाचार्य की आर्यासप्तशती, हाल की गाथा–सप्तशती, धनदराज का श्रृड्.गारधनदशक इत्यादि शतक काव्य प्रसिद्ध हैं।

सन्दर्भ – ग्रन्थ सूची

1. बहादुरचन्द छाबड़ा – संस्कृत साहित्य का इतिहास पृ॰ 390
2. संस्कृतसाहित्य काविशद् इतिहास – डॉ ॰ पुष्पा गुप्ता पृ ॰ 109
3. नीतिशतक श्लोक सं ॰ 13
4. संस्कृत साहित्य का विश्द इतिहास डॉ॰ पुष्पा गुप्ता पृ॰ 110
5. नीति शतक सं॰ 79
6. नीतिशतक – 51
7. नी॰ श॰ श्लोक सं॰ 14
8. नी॰ शं॰ श्लोक सं॰ 30
9. श्रृडा.गर शतक – 3
10. श्रृड.गार शतक श्लोक सं॰ 84
11. वही श्लोक सं॰37
12. वही श्लोक सं॰ 58
13. वैराग्य शतक श्लोक सं॰ 12
14. वही श्लोक सं॰ 73
15. डॉ॰ पुष्पा गुप्ता कृत संस्कृत साहित्यका विशद इतिहास पृ॰ सं॰ 112
16. सूर्यशतक श्लोक सं॰ – 1
17. सूर्यशतक श्लोक सं 1
18. बाण भट्ट चण्डी शतक श्लोक सं॰ 13